बाँसों के झुरमुट से

नवगीत संग्रह

ब्रजेश श्रीवास्तव

Scanned with OKEN Scanner

	बाँसों के झुरमुट से
	नवगीत संग्रह
	ब्रजेश श्रीवास्तव
संस्करण	प्रथम : २०१३
सर्वाधिकार	रचनाकार
प्रकाशक	उत्तरायण प्रकाशन सी-२/११४, सेक्टर-एफ (विस्तार) एल०डी०ए० कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ - २२६०१२ दूरभाष : ९८३९८२५०६२
शब्दांकन	संतोष तिवारी
आवरण	अभिषेक श्रीवास्तव
मुद्रण	न्यू एरा डिजाइनर्स एण्ड प्रिन्टर्स लखनऊ-२२६०१२
मूल्य	रुपये २५०-००

'BANSON KE JHURMUT SE'

NAVGEET COLLECTION

BY – BRAJESH SRIVASTAVA

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

१.	आज अभी बिटिया आई है	१९
२.	देखते ही देखते बिटिया	२१
३.	बाहर तुम झाँको तो	२२
४.	चाहते संवेदनायें	२४
५.	फड़फड़ाते पत्र हैं घायल	२६
६.	मत पूछो	२८
७.	कुछ विस्मित-सा	३०
८.	बासन्तिक कोयल को सुनकर	३२
९.	सपने तो आते हैं अब भी	३३
१०.	आज लिखी है घर को चिट्ठी	३४
११.	खेतों की, खलिहानों की भी	३६
१२.	गाँव-शहर में सावन	३८
१३.	गर्मी की छुट्टी	४०
१४.	जानें इसके तन पर होते	४२
१५.	सिर्फ अभिनय वार्ता रसमय	४४
१६.	तेवर के संग स्वर भी बदले	४६
१७.	एक साथ दो चार बैठकर	४८
१८.	घर चौपालों सी बतियाहट	५०
१९.	अब तो पंडित रामनिहोरे	५२
२०.	आमोती, दामोती, राजा पलपोते	५४
२१.	जाने कितने खंभे हैं	५५
२२.	रोज समझ में आता हमको	५७
२३.	आज नेवला मिला रहा है	५९
२४.	बंद अंधेरे कमरे से बाहर निकलो	६०
२५	कितने बड़े मकान	६२
२६.	कितने ही पन्ने पलटे हैं	६४
२७.	घर से आँगन का-	६६
२८.	पिंजरे में बंदी पक्षी को-	६८

Scanned with OKEN Scanner

२९. दिन पर दिन बीते जाते हैं ७०
३०. हिरना अब तुम मत वन जाओ ७१
३१. स्नेह दीप जल जायेंगे ७२
३२. दादा जी कहते हैं ७४
३३. झाँझर, ढोल, मजीरा, ढोलक ७६
३४. भूल गया हूँ ताल - तलैया ७८
३५. अपना आँगन, अपना छवना ७९
३६. उतर रहे सीढ़ी दर सीढ़ी ८१
३७. वन-उपवन मिल काट रहे हैं ८२
३८. लिखा हुआ जैसा पोथी में ८३
३९. मन्दिरों में बज रहे घड़ियाल, घण्टे ८४
४०. जब-जब आपसदारी भूले ८६
४१. मन अकेला है ८८
४२. रोज समझने, समझाने में ८९
४३. हम जन साधारण की बोली हैं ९१
४४. माँ ने जो कुछ भी सिखलाया, ९२
४५. निरी सभ्यता के रहते अब ९३
४६. शब्दों का सहकार ९४
४७. यह अजूबा है ९६
४८. गिलहरी के पाँव छोटे ९८
४९. बहुत दिनों के बाद १००
५०. तुम अकेले मत चले आना १०२
५१. वही मुहल्ला १०४
५२. चुन-मुन छुन-छुन १०५
५३. आसमान को देख १०६
५४. नन्हे मुन्ने १०८
५५. खटिया, पाये १०९
५६. धीरे-धीरे बढ़ता जाता ११०
५७. अख़बार १११

Scanned with OKEN Scanner

ब्रजेश श्रीवास्तव

नाम	:	ब्रजेश चन्द्र श्रीवास्तव
जन्म दिनांक /स्थान	:	पाँच जुलाई उन्नीस सौ सैतालिस बड़ा गाँव, जिला-झाँसी
पिता	:	राजवैद्य स्व० घनश्याम दास श्रीवास्तव
माँ	:	स्व० जनक दुलारी श्रीवास्तव
प्रकाशन		समवेत संकलन सप्त सिंधु (२००५), तथा शब्दायन (२०१२) में नवगीत संकलित अनेक पत्रिकाओं, समाचार पत्रों जैसे दैनिक जागरण, अमर उजाला, नई दुनिया, पाँचजन्य, अयोध्या संवाद, स्वदेश, तथा लोक मंगल, साहित्य परिक्रमा, साहित्यिक पुनर्नवा (दै०जागरण) कला अभिप्राय (बिहार) संकल्प रथ, कादम्बिनी आदि में गीत, नवगीत प्रकाशित।
संपादन	:	शब्द सेतु २००१, २००५, २०११ (निराला साहित्य संगम, बड़ा गाँव) संस्थापना वर्ष १९९९
अभिरुचि	:	साहित्य सर्जन सामाजिक कार्य
सम्प्रति	:	स्वतंत्र लेखन।
निवास	:	पैतृक-टाउन एरिया, बड़ा गाँव, जिला झाँसी
सम्पर्क	:	सूरी नगर, एस.एल.पी. कालेज रोड, मुरार, ग्वालियर-६
फोन	:	०७५१-२४६७९५२, मो० : ९८२६२१३०६६

उत्तरायण प्रकाशन
लखनऊ, २२६०१२

Scanned with OKEN Scanner